B.A. (Hons.) Part — III

DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU — Muzaffarpur

Subject — Sanskrit

Paper — VII

Short Notes

5×4 = 20 Marks

Dated — 25.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण -

8. अतिशयोक्ति अलङ्कार

उपमेय में उपमान के आरोप को अतिशयोक्ति अलङ्कार कहते हैं, अर्थात् जहाँ उपमेय को उपमान बिल्कुल ग्रस ले, वहाँ अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। प्रकृत = उपमेय के निगरण के साथ उपमान में अभेद के आरोप को अध्यवसाय कहते हैं। अध्यवसाय दो प्रकार का होता है - एक सिद्ध और दूसरा साध्य। उत्प्रेक्षा अलङ्कार में उपमेय का उपमान में अनिश्चित आरोप होता है। अतः वहाँ अध्यवसाय सिद्ध नहीं, अपितु साध्य है। अतिशयोक्ति अलङ्कार में उपमेय में उपमान का आरोप निश्चित होता है। अतः वहाँ सिद्ध है। यथा —

"अकालजलदावली किरतु नाम मुक्तावली-
स्पर्वणिविधुन्तुदस्तुदतु हन्त! शीतद्युतिम्।
इदं तु महदद्भुतं यदनपायिविद्युल्लता-
ऽवलम्बि कनकाचलद्वयमधोमुखं नृत्यति॥"

यहाँ नायिका के लोकोत्तर सौन्दर्य वर्णन के साथ उसके केश, मुख और स्तनों का मेघावली, चन्द्रमा और स्वर्णपर्वतों से अध्यवसाय = अभेद ज्ञान कराया गया है। इसलिए यहाँ अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

———— 0 ————

क्रमशः जारी